प्रेस विज्ञप्ति 19.06.2008

उत्तरकाशी, 19 जून, भागीरथी तट पर गंगा के अविरल प्रवाह को बनाए रखने की मांग कर रहे प्रसिद्ध पर्यावरणविद् डा. गुरू दास अग्रवाल का आमरण अनशन आज सातवें दिन भी जारी रहा। उन के स्वास्थ में गिरावट शुरू हो गई है। चिकित्सकों ने आज उनके मूत्र के नमूने लिए तथा किडनी व लीवर की जांच की संस्तुति की है।

इस बीच विभिन्न संगठनों व व्यक्तियों का इस मुददे पर समर्थन तेज होता जा रहा है। पद्म विभूषण प्रख्यात समाजसेवी नानाजी देशमुख का आर्शिवाद पत्र लेकर दीनदयाल शोध संस्थान के प्रधान सचिव डा. भरत पाठक आज प्रो. अग्रवाल के पास पहुचें तथा उन्हें नानाजी द्वारा इस मुददे पर अपना पूरा समर्थन दिए जाने की बात बताई।

अखबारों में छपी पूर्व मुख्यमंत्री भगत सिंह कोश्यारी के ब्यान पर प्रतिक्रिया देते हुए डा. अग्रवाल ने उनकी इस साफगोसी के लिए साधुवाद दिया है कि विकास का मुददा आस्था से काफी अहम है। और भौतिक सुख सुविधाओं और भोगवाद को तरजीह देने की पश्चिम समस्या की तथाकथित विकासवादी धाएणाएं करोड़ों भारतीयों पर भारी है। डा. अग्रवाल ने गंगोत्री से धरासु तक के भागीरथी के प्रवाह की तुलना पेड़ के जड़ से की तथा यह पूछा है कि जिस प्रकार पेड़ में जड़ को महत्व न देने से पेड़ का अस्तित्व ही खत्म हो जाता है क्या उसी प्रकार गंगा के अस्तित्व को बनाए रखने के लिए सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण भागीरथी के ऊपर प्रवाह को अविरल बनाए रखना हैं अथवा पहले कानपुर, इलाहाबाद, या पटना की मैली गंगा की चिन्ता करना।

गिरते स्वास्थ के बीच विभिन्न तबकों से आ रही अनशन तोड़ने की अपील पर अपना मत व्यक्त करते हुए प्रो. अग्रवाल ने कहा कि मैने अपना यह अनशन भागीरथी के अविरल प्रवाह को बनाए रखने तथा मां गंगा की पवित्रता बनाए रखने के संकल्प के साथ शुरू किया है और यह तब तक जारी रहेगा जब तक केन्द्र व राज्य सरकारों भागीरथी पर निर्माणाधीन व प्रस्तावित परियोजनाओं को रोकने की घोषणा नहीं कर देती अथवा मेरे प्राण नहीं छूट जाते। जिन संगठनों अथवा व्यक्तियों को मां गंगा में आस्था है और वे मेरी मांग से सहमत है वे सिर्फ इस मुददे के समर्थन की ही बात न करें वरन् इस संबंध में ठोस कदम उठाकर या तो सरकारों पर दबाव बनाकर उन्हें परियोजनाओं को रोकने पर विवष करें अथवा अनशन में शामिल हों तथा मां के ऊपर हो रहें अत्याचार के विरोध में मेरी तरह जान देने का संकल्प लें। डा. अग्रवाल ने आगे कहा कि उनका स्पष्ट मत है कि यदि आस्थावान लोग अपने प्राण देने के संकल्प के साथ आगे आएं तो सरकार को परियोजनाएं रोकनी ही होगीं तथा भागीरथी का अविरल प्रवाह जारी रह सकता है। गंगा बचेगी तो गंगा निर्मलीकरण हेतु आगे प्रयास संभव है अन्यथा उस मुददे का कोई अर्थ ही नहीं।

डा. अग्रवाल के द्वारा उत्तराखण्ड के मुख्यमंत्री को दो दिनों पूर्व लिखे पत्र का कोई उत्तर अब तक प्राप्त नहीं हुआ है।